कटाई एवं गहाई

कुल्थी की फसल की कटाई के समय विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। पौधे की ऊपर की फलियाँ जब पीली पड़ने लगे तब कटाई कर लेनी चाहिए क्योंकि इस समय पौधे के निचले एवं मध्य भाग में लगी फलियाँ पक जाती है। कटाई में देरी करने से नीचे की फलियाँ चटकने का भय होता है जिससे उत्पादन में कमी आ जाती है। कटाई के उपरान्त पौधे को खुली धूप में सुखाकर गहाई करनी चाहिए।

भण्डारण

गहाई के बाद दाने को 3–4 दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिए तथा भण्डारण के समय दाने मं 9–10 प्रतिशत नमी होनी चाहिए।

उपजः उन्नत तकनीक व प्रबंधन को अपनाकर 6–10 क्विंटल दाने की उपज/हे. प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक उत्पादन लेने हेतु आवश्यक बिंदू

- ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई तीन वर्ष में एक बार अवश्य करें।
- बुवाई पूर्व बीजोपचार अवश्य करें।
- पोषक तत्वों की मात्रा मृदा परीक्षण के आधार पर ही दें।
- पौध संरक्षण के लिये एकीकृत पौध संरक्षण के उपायों को अपनाना चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण अवश्य करें।

- तकनीकी जानकारी हेतु अपने जिले/नजदीकी कृषि विज्ञान केन्द्र से संपर्क करें।
- भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा फसल उत्पादन (जुताई, खाद, बीज, सूक्ष्म पोषक तत्व, कीटनाशी, सिंचाई के साधनों), कृषि यन्त्रों, भण्डारण इत्यादि हेतु दी जाने वाली सुविधाओं/अनुदान सहायता/लाभ की जानकारी हेतु संबंधित राज्य /जिला/ विकास खण्ड स्थित कृषि विभाग से संपर्क करें।

अधिक जानकारी हेतु देखें–
एम–किसान पोर्टल– http://mkisan.gov.in/
फार्मर पोर्टल– http://farmer.gov.in/
किसान कॉल सेन्टर– टोल–फ्री नं – 1800–180–1551

लेखन एवं संपादन
डॉ ए. के. तिवारी
डॉ ए. के. शिवहरे
श्री विपिन कुमार

तकनीकी सहयोग
डॉ. संदीप सिलावट
श्री सतीश द्विवेदी

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक
भारत सरकार
दलहन विकास निदेशालय
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एव किसान कल्याण विभाग
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन, भोपाल–462004 (म.प्र.)
ई–मेल – dpd.mp@nic.in
फेक्स – 0755-2571678,
दूरभाष – 0755-2550353/ 2572313
वेबसाइट – www.dpd.gov.in

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती
Golden Jubilee

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011
दूरभाषः 0755– 2555883, 4036202, 4036217
वेबसाइट : http://www.iffco.in, Email: smm_bhopal@iffco.in

मुद्रक : कृषक जगत प्रींटिंग वर्क्स, भोपाल, दूरभाष : 9826255861

कुल्थी

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग
दलहन विकास निदेशालय
छठी मंजिल, विन्ध्याचल भवन भोपाल - 462004 (म.प्र.)

सौजन्य से :

पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
स्वर्ण जयंती
Golden Jubilee

किसानों, कृषि एवं सहकारिता को समर्पित
गौरवमयी स्वर्ण जयंती वर्ष में
इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोआपरेटिव लिमिटेड
राज्य कार्यालय–मध्यप्रदेश
ब्लाक–2, तृतीय तल, ''पर्यावास'', अरेरा हिल्स, भोपाल–462011

SOIL HEALTH CARD
स्वस्थ धरा, खेत हरा

एक कदम स्वच्छता की ओर

Per Drop, More Crop

कुल्थी

महत्व

कुल्थी दक्षिण भारत की एक महत्वपूर्ण फसल है। इसका दाना मानव के भोजन में दाल के रूप में, रसम बनाने में और पशु के लिये दाने व चारे में भी होता है। इसको हरी खाद के रूप में भी ले सकते हैं।

फसल स्तर

भारत में कुल्थी की खेती मुख्यतः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडू, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उत्तराखण्ड के तलहटी में और हिमाचल प्रदेश में की जाती है। इसकी खेती अन्य देशों मुख्य रूप से जैसे श्री लंका, मलेशिया, वेस्टइण्डीज इत्यादि में भी की जाती है।

बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012–2015) के अन्तर्गत भारत में कुल्थी का कुल क्षेत्रफल 2.32 लाख हे. व उत्पादन 1.05 लाख टन था। क्षेत्रफल व उत्पादन की दृष्टि से कर्नाटक का प्रथम स्थान आता है जिसकी भागीदारी क्षेत्रफल 26.72: व उत्पादन में 25.71: है। इसके बाद उड़ीसा (19.46 प्रतिशत व 15.48 प्रतिशत), छत्तीसगढ़ (19.29 प्रतिशत व 13.29 प्रतिशत) का स्थान आता है। सर्वाधिक उपज बिहार (959 कि.ग्रा./हे.) है। इसके बाद पश्चिम बंगाल (796 कि.ग्रा./हे.) व झारखण्ड (603 कि.ग्रा./हे.) में पायी गई। (DES, 2015.16).

उपज अन्तर

सामान्यतः यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानी किस्मों की उपज में 25–45% का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

राज्यवार किस्में

राज्य	अनुमोदित किस्में
राजस्थान	के.एस.–2, प्रताप कुल्थी (ए.के.–42)
आंध्रप्रदेश	पलेम–1, पलेम–2, पाईयुर–2, पी.एच.जी.
तमिलनाडू	पाईयुर–2कर्नाटकपी.एच.जी.–9, जी.पी.एम.–6, सी.आर. आई.डी.ए.1–18 आर
गुजरात	प्रताप कुल्थी–1 (ए.के.–42), जी.एच.जी.–5
उत्तराखंड	वी.एल. घाट–8, वी.एल. घाट–10
छत्तीसगढ़	इन्द्रा कुल्थी–1, (आई.के.जी.एच. 01–01)

स्त्रोतः- सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं भा.द.अनु.सं. –भा.कृ.अनु.प., कानपुर।

जलवायु

कुल्थी अत्यधिक सूखा सहनशील फसल है। इसकी उपयुक्त वृद्धि के लिये हल्की गर्म, सूखी जलवायु अच्छी रहती है। इसे अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में अच्छे से नहीं उगाया जा सकता क्योंकि वहाँ जलवायु ठण्डी व आर्द्र होती है। इसकी खेती समुद्र तल से 1000 मी. ऊँचाई तक कर सकते है। इसकी उपयुक्त वृद्धि के लिये तापक्रम 25 से 30 सेन्टीग्रेड और सापेक्षित 50–80% के बीच होनी चाहिए। फसल की प्रारम्भिक अवस्था में भारी वर्षा से जड़ो की ग्रंथियाँ बनना प्रभावित होती है क्योंकि मृदा का वायु संचार कम होता है। इसकी सफलतम खेती के लिये वार्षिक वर्षा 80 से. मी. पर्याप्त रहती है, किन्तु इसको कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगा सकते हैं।

भूमि व भूमि की तैयारी

दक्षिण भारत में इसको सामान्यतः लैटराइटिक मृदा (निम्न उर्वरता) में उगाया जाता है। इस फसल को कई प्रकार की हल्की से भारी मृदा में उगाया जाता है जो कि मृदा क्षारीयता से मुक्त हो। इस फसल को कम खेत की तैयारी की आवश्यकता होती है। केवल 1–2 जुताई करके पाटा लगाकर तैयार कर लेना चाहिए।

बुवाई समय

कुल्थी की फसल बोने का समय अगस्त अंत से नवम्बर माह होता है। चारे के लिये बोई गई फसल की बुवाई जून–अगस्त में करते हैं। तमिलनाडू में इसको सितम्बर से नवम्बर में बोया जाता है। महाराष्ट्र में इसको खरीफ में बाजरा के साथ या कई बार रामतिल (नाइजर) के साथ बोया जाता है और इसको रबी में धान के बाद लेते है। मध्य प्रदेश में यह रबी फसल के रूप में ली जाती है। उत्तरी क्षेत्र में इसको खरीफ फसल के रूप में लेते हैं। पश्चिम बंगाल में इसकी बुवाई का समय अक्टूबर–नवम्बर है।

बीज दर व फसल अन्तराल

सामान्यतः द्विउद्देशीय फसल (चारे व दाने) की बुवाई छिटकवा विधि से 40 कि.ग्रा./हे. बीज दर से करते है। कतार में बुवाई करने पर दाने के लिये बोई गई फसल की बीज दर 25–30 कि.ग्रा./हे. पर्याप्त होती है। खरीफ फसल में कतार से कतार की दूरी 40–45 से.मी. व रबी फसल में कतार से कतार की दूरी 25–30 से.मी. रखते है और पौधे से पौधे की दूरी लगभग 5 से.मी. रखना चाहिए।

बीजोपचार

बुवाई से पूर्व बीजों को फफूँदनाशी दवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज दर से उपचार करना चाहिए। इसके बाद राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर की 5–7 ग्रा./कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए।

उर्वरक

बुवाई के समय 20 कि.ग्रा. नत्रजन व 30 कि.ग्रा. फास्फोरस/हे. की दर से आधार उर्वरक के रूप में बीज से नीचे देना चाहिए।

सिंचाई

फसल में फूल आने से पहले एवं फली में दाना बनते समय सिंचाई करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण

बुवाई के बाद व अंकुरण पूर्व (0–3 दिन) पेन्डीमिथालिन की 0.75–1 कि. ग्रा. सक्रिय तत्व को 400–600 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. के हिसाब से उपयोग करें। इसके बाद हाथ से एक निंदाई बुवाई के 20–25 दिन बाद करें।

फसल संरक्षण

कीट-नियंत्रण

1. **रसचूसक कीटः** पौधो का रस चूसकर फसल को नुकसान पहुँचाते है। इनके नियंत्रण के लिये डायमिथिएट 30 ई.सी. को 2 मि.ली./ली. या मिथाइल डेमेटान को 1 मि.ली./ली. पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।
२. **पत्ती भक्षक व फली भेदक कीट** : इन कीटों के नियंत्रण के लिये क्विनालफॉस को 2 मि.ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण

1. **पीला मोजेक रोग** : इस रोग के नियंत्रण के लिये सफेद मक्खियों का नियंत्रण करना चाहिए। इसके लिये डायमिथिएट 30 ई.सी. दवा को 2 मि.ली./ली पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
2. **जड सडन** : इस बीमारी से बचाव के लिये बुवाई पूर्व बीजों को फफूंदनाशी दवा कार्बेन्डाजिम का 2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज के हिसाब से उपचार करके बोये।